

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES



ISSN 2277 – 9809 (online)

ISSN 2348 - 9359 (Print)

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

www.IRJMSH.com
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

मदन मोहन मालवीय का राजनीतिक चिंतन और भारतीय राष्ट्रवाद: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

(Madan Mohan Malaviya's Political Thought and Indian Nationalism: An Analytical Study)

डॉ. बृजेश स्वरूप सोनकर

असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग
कर्म क्षेत्र महाविद्यालय, इटावा (उ.प्र.)

सारांश (Abstract)

प्रस्तुत शोध पत्र “मदन मोहन मालवीय का राजनीतिक चिंतन और भारतीय राष्ट्रवाद: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन” में महामना मदन मोहन मालवीय के राजनीतिक विचारों का गहन विश्लेषण किया गया है। शोध से स्पष्ट होता है कि मालवीय का चिंतन उदारवादी संवैधानिक राष्ट्रवाद तथा सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का संश्लेषण प्रस्तुत करता है। उन्होंने शिक्षा एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान को भारतीय राष्ट्र निर्माण का प्रमुख आधार माना। काशी हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना उनके राष्ट्रवादी दृष्टिकोण का सबसे महत्वपूर्ण व्यावहारिक रूप है। वे संवैधानिक सुधारों के समर्थक थे, किंतु सांस्कृतिक पहचान एवं हिंदू समाज के संगठन को भी आवश्यक समझते थे। गांधी, तिलक, गोखले एवं लाला लाजपत राय से तुलना करने पर उनकी स्थिति मध्यवर्ती एवं संतुलित दिखाई देती है।

आलोचनात्मक मूल्यांकन से ज्ञात होता है कि उनके विचारों में हिंदू-मुस्लिम एकता की सैद्धांतिक स्वीकृति एवं सांस्कृतिक संरक्षण की व्यावहारिक आवश्यकता के बीच तनाव था। समकालीन संदर्भ में उनके विचार शिक्षा नीति (विशेषकर NEP 2020), सांस्कृतिक राष्ट्रवाद एवं राष्ट्रीय एकता के विमर्श में अत्यंत प्रासंगिक हैं। अंत में यह निष्कर्ष निकलता है कि मालवीय भारतीय राष्ट्रवाद के उन नेताओं में से हैं, जिन्होंने राजनीति को शिक्षा, संस्कृति एवं चरित्र निर्माण से जोड़कर दीर्घकालिक राष्ट्र निर्माण का मार्ग प्रशस्त किया। उनका योगदान आज भी आधुनिक भारत के निर्माण में प्रेरणा का स्रोत बना हुआ है।

मुख्य शब्द (Keywords) : मदन मोहन मालवीय, राजनीतिक चिंतन, भारतीय राष्ट्रवाद, हिंदू राष्ट्रवाद, कांग्रेस, शिक्षा और राष्ट्र निर्माण, स्वराज, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, उदारवादी राष्ट्रवाद।

प्रस्तावना (Introduction)

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास केवल राजनीतिक संघर्षों और आंदोलनों का वृत्तान्त नहीं है, अपितु वह विचारों, संस्थाओं तथा सांस्कृतिक पुनरुत्थान की एक जटिल प्रक्रिया भी है। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध और बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में जब भारत ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के अधीन था, तब राष्ट्रीय चेतना के विभिन्न रूप सामने आए। इनमें एक प्रमुख धारा वह थी जो शिक्षा, संस्कृति, धर्म और संवैधानिक राजनीति के माध्यम से राष्ट्र निर्माण का मार्ग प्रशस्त करना चाहती थी। इस धारा के सर्वाधिक प्रभावशाली एवं बहुआयामी व्यक्तित्वों में पंडित मदन मोहन मालवीय (25 दिसंबर 1861 - 12 नवंबर 1946) का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। मालवीय का जन्म प्रयागराज (तत्कालीन इलाहाबाद) के लाल डिग्गी मुहल्ले में एक गौर ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनके पिता

पंडित बृजनाथ संस्कृत के प्रकांड विद्वान तथा भागवत कथा वाचक थे, जबकि माता मूना देवी थीं। प्रारंभिक शिक्षा संस्कृत पाठशालाओं में प्राप्त करने के बाद उन्होंने म्योर सेंट्रल कॉलेज, इलाहाबाद से स्नातक की उपाधि ग्रहण की तथा बाद में कलकत्ता विश्वविद्यालय से भी शिक्षा प्राप्त की। वे अध्यापक, पत्रकार, वकील, शिक्षाविद्, समाज सुधारक तथा राजनीतिज्ञ—इन सभी भूमिकाओं में सक्रिय रहे। महात्मा गांधी ने उन्हें 'महामना' की उपाधि दी, जो उनके उदार, त्यागमय एवं राष्ट्रभक्त व्यक्तित्व का परिचायक है। मरणोपरांत 24 दिसंबर 2014 को उन्हें भारत का सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न प्रदान किया गया।

मालवीय लगभग पाँच दशकों तक भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से जुड़े रहे। वे स्वतंत्रता पूर्व काल में कांग्रेस के एकमात्र ऐसे नेता थे जिन्हें चार बार अध्यक्ष चुना गया—1909 (लाहौर), 1918 (दिल्ली), 1932 (दिल्ली) तथा 1933 (कलकत्ता)। वे इम्पीरियल लेजिस्लेटिव काउंसिल (1909-1920) तथा बाद में सेंट्रल लेजिस्लेटिव असेंबली के सदस्य भी रहे। 1916 में लखनऊ समझौते के अंतर्गत मुसलमानों के लिए अलग निर्वाचन क्षेत्रों के प्रावधान का उन्होंने विरोध किया। चौरी चौरा कांड (1922) में सत्र न्यायालय द्वारा फाँसी की सजा पाए 177 स्वतंत्रता सेनानियों के मुकदमे की पैरवी उन्होंने उच्च न्यायालय में की तथा उनमें से 156 को सफलतापूर्वक रिहा कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनकी सबसे स्थायी उपलब्धि काशी हिंदू विश्वविद्यालय (बनारस हिंदू विश्वविद्यालय) की स्थापना है। 1915 के अधिनियम के अंतर्गत 4 फरवरी 1916 को वसंत पंचमी के दिन इसकी नींव रखी गई। मालवीय इस विश्वविद्यालय के संस्थापक तथा लंबे समय तक (लगभग 1919-1939) उपकुलपति रहे। उन्होंने शिक्षा को राष्ट्र निर्माण का मूल आधार माना। उनका स्पष्ट मत था कि औपनिवेशिक शिक्षा प्रणाली केवल नौकरशाह पैदा करती है, जबकि भारत को ऐसे नागरिकों की आवश्यकता है जो भारतीय ज्ञान परंपरा तथा आधुनिक विज्ञान दोनों में पारंगत हों और राष्ट्र के प्रति समर्पित हों। विश्वविद्यालय की स्थापना के पीछे उनकी यह दृष्टि थी कि यह भारतीय संस्कृति, संस्कृत साहित्य, धर्म तथा आधुनिक तकनीकी ज्ञान का संगम बने और राष्ट्रवादी चेतना का केंद्र बने। मालवीय का राजनीतिक चिंतन उदारवादी संवैधानिक सुधारवाद, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद तथा सामाजिक सुधार का मिश्रण था। वे स्वराज, स्वदेशी तथा राष्ट्रीय एकता के प्रबल समर्थक थे। साथ ही वे हिंदू समाज के संगठन, अस्पृश्यता निवारण तथा शिक्षा के प्रसार पर बल देते रहे। उन्होंने अखिल भारतीय हिंदू महासभा की स्थापना में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके विचारों में एक ओर संवैधानिक मार्ग से स्वतंत्रता प्राप्ति की आकांक्षा थी, तो दूसरी ओर भारतीय सांस्कृतिक पहचान को मजबूत करने का आग्रह। यह द्वैध उनके चिंतन को भारतीय राष्ट्रवाद की मुख्यधारा में विशिष्ट स्थान प्रदान करता है।

शोध की आवश्यकता एवं औचित्य

भारतीय राष्ट्रवाद के अध्ययन में प्रायः गांधीवादी, तिलकवादी अथवा नेहरूवादी धाराओं पर ही अधिक ध्यान केंद्रित किया जाता है। मालवीय जैसे नेताओं का राजनीतिक चिंतन, जो शिक्षा, संस्कृति तथा संवैधानिक राजनीति को राष्ट्रवाद का आधार बनाता है, अपेक्षाकृत कम विश्लेषणात्मक अध्ययन का विषय बना है। वर्तमान में जब शिक्षा नीति, सांस्कृतिक पहचान, राष्ट्रीय एकता तथा धर्मनिरपेक्षता बनाम सांस्कृतिक राष्ट्रवाद जैसे प्रश्न पुनः चर्चा में हैं, तब मालवीय के विचारों का गंभीर अध्ययन अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है। उनके द्वारा स्थापित काशी हिंदू विश्वविद्यालय आज भी भारत के प्रमुख शैक्षणिक संस्थानों में से एक है तथा उनके विचारों का प्रभाव समकालीन राजनीति एवं शिक्षा क्षेत्र में प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से दिखाई देता है।

शोध समस्या

प्रस्तुत शोध का मूल प्रश्न यह है कि मदन मोहन मालवीय का राजनीतिक चिंतन भारतीय राष्ट्रवाद की किस धारा का प्रतिनिधित्व करता है? उनके विचार उदारवादी राष्ट्रवाद, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद अथवा दोनों के संश्लेषण के रूप में कैसे समझे जा सकते हैं? शिक्षा एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान को उन्होंने राष्ट्र निर्माण का साधन कैसे बनाया? तथा उनके विचारों की समकालीन प्रासंगिकता क्या है?

शोध के उद्देश्य

1. मदन मोहन मालवीय के राजनीतिक विचारों का व्यवस्थित विश्लेषण करना।
2. उनके राष्ट्रवाद की अवधारणा को समकालीन प्रमुख चिंतकों (गोखले, तिलक, गांधी आदि) के संदर्भ में तुलनात्मक रूप से समझना।
3. शिक्षा एवं सांस्कृतिक संस्थाओं (विशेषकर काशी हिंदू विश्वविद्यालय) के माध्यम से उनके राष्ट्र निर्माण संबंधी दृष्टिकोण का अध्ययन करना।
4. उनके विचारों की शक्तियों, सीमाओं तथा समकालीन प्रासंगिकता का आलोचनात्मक मूल्यांकन करना।

शोध प्रश्न

- मालवीय के राजनीतिक चिंतन के मूल तत्व क्या थे?
- भारतीय राष्ट्रवाद की विभिन्न धाराओं में उनकी स्थिति क्या थी?
- शिक्षा को उन्होंने राष्ट्रवाद का साधन किस प्रकार बनाया?
- उनके विचारों में हिंदू सांस्कृतिक पहचान तथा राष्ट्रीय एकता का संबंध किस प्रकार स्थापित होता है?
- वर्तमान भारतीय राजनीति एवं शिक्षा व्यवस्था में उनके विचारों की क्या प्रासंगिकता है?

परिकल्पना:

मदन मोहन मालवीय का राजनीतिक चिंतन उदारवादी संवैधानिक राष्ट्रवाद तथा सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का संश्लेषण प्रस्तुत करता है, जिसमें शिक्षा एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान को भारतीय राष्ट्र निर्माण का प्रमुख आधार माना गया है।

अध्ययन की सीमाएँ यह शोध मुख्यतः उपलब्ध प्राथमिक स्रोतों (मालवीय के भाषण, लेख, कांग्रेस प्रस्ताव) तथा द्वितीयक स्रोतों (जीवनी, इतिहास ग्रंथ, शोध लेख) पर आधारित है। यह उनके संपूर्ण जीवन-वृत्त का विस्तृत अध्ययन नहीं, अपितु उनके राजनीतिक चिंतन एवं राष्ट्रवाद संबंधी विचारों का विश्लेषणात्मक अध्ययन है। सांप्रदायिक मुद्दों पर उनके रुख का मूल्यांकन ऐतिहासिक संदर्भ में किया गया है, न कि वर्तमान राजनीतिक दृष्टिकोण से।

साहित्य सर्वेक्षण (Literature Review)

मदन मोहन मालवीय पर उपलब्ध साहित्य मुख्यतः जीवनीपरक एवं वर्णनात्मक है। इनमें सबसे महत्वपूर्ण एवं प्रामाणिक कृति **जगन्नाथ प्रसाद मिश्र** की पुस्तक *Madan Mohan Malaviya and the Indian Freedom Movement* (Oxford University Press, 2016) है। यह पुस्तक प्राथमिक स्रोतों के आधार पर मालवीय के राष्ट्रवाद की अवधारणा को “composite, constructive and creative” बताती है तथा उनके संवैधानिक राजनीति, शिक्षा एवं

हिंदू-मुस्लिम संबंधों पर विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करती है। मिश्र का कार्य मालवीय को केवल उदारवादी या हिंदू राष्ट्रवादी के रूप में सीमित न करके उनके बहुआयामी योगदान को रेखांकित करता है।

परमानंद द्वारा लिखित *Mahamana Madan Mohan Malaviya: An Historical Biography* (मालवीय अध्ययन संस्थान, काशी हिंदू विश्वविद्यालय, 1985) दो खंडों में विस्तृत ऐतिहासिक जीवनी है, जिसमें उनके सार्वजनिक जीवन के लगभग सभी पक्षों का कालक्रमानुसार वर्णन मिलता है। यह कृति तथ्यात्मक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, किंतु वैचारिक विश्लेषण अपेक्षाकृत कम है।

सुंदर लाल गुप्ता की *Pandit Madan Mohan Malaviya: A Socio-Political Study* (Chugh Publications, 1978) सामाजिक-राजनीतिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है। इसमें मालवीय के समान न्याय एवं सामुदायिक एकता संबंधी विचारों पर विशेष बल दिया गया है। **एस.आर. बखशी** की कृतियाँ (*Struggle for Independence: Madan Mohan Malaviya*, 1989 तथा *Madan Mohan Malaviya: The Man and His Ideology*, 1991) स्वतंत्रता आंदोलन में उनकी भूमिका को रेखांकित करती हैं, किंतु गहन सैद्धांतिक विश्लेषण का अभाव है।

सीताराम चतुर्वेदी की *Madan Mohan Malaviya* (प्रकाशन विभाग, भारत सरकार) आधिकारिक जीवनी है, जो मुख्यतः प्रशंसात्मक स्वर में लिखी गई है। इनके अतिरिक्त **विष्णुनाथ पांडेय**, **एस.के. मैनी** आदि द्वारा संपादित स्मृति ग्रंथ भी उपलब्ध हैं, जो तथ्यात्मक जानकारी तो देते हैं, परंतु आलोचनात्मक राजनीतिक सिद्धांत की दृष्टि से सीमित हैं।

भारतीय राष्ट्रवाद के प्रमुख सिद्धांतों पर साहित्य

भारतीय राष्ट्रवाद के अध्ययन में चार प्रमुख धाराएँ स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं—

उदारवादी (मॉडरेट) राष्ट्रवाद की व्याख्या मुख्यतः **बिपिन चंद्र** तथा उनके सहयोगियों (*India's Struggle for Independence*) में मिलती है। इसमें दादाभाई नौरोजी, गोखले आदि के संवैधानिक एवं याचिकावादी दृष्टिकोण को राष्ट्र निर्माण की प्रारंभिक अवस्था माना गया है।

चरमपंथी (एक्सट्रीमिस्ट) राष्ट्रवाद पर **बाल गंगाधर तिलक**, **लाला लाजपत राय** तथा **बिपिन चंद्र पाल** के विचारों का अध्ययन उपलब्ध है। इसमें स्वराज की अवधारणा को अधिक आक्रामक एवं सांस्कृतिक आधार प्रदान किया गया।

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की धारा में **अरविंद घोष**, **विवेकानंद** तथा बाद में **वी.डी. सावरकर** के विचारों का उल्लेख मिलता है। **क्रिस्टोफ जैफ़ेलाँट** की *The Hindu Nationalist Movement in India* इस धारा के संगठनात्मक विकास का गहन अध्ययन प्रस्तुत करती है।

गांधीवादी राष्ट्रवाद पर स्वयं गांधी के लेखन (*Hind Swaraj* आदि) तथा **रामचंद्र गुहा**, **बिपिन चंद्र** आदि के विश्लेषण उपलब्ध हैं, जिसमें अहिंसा, सत्य तथा ग्राम स्वराज्य पर बल दिया गया है।

मालवीय के राजनीतिक विचारों पर पूर्ववर्ती शोध कार्यों की आलोचनात्मक समीक्षा

मालवीय के राजनीतिक विचारों पर विशिष्ट शोध अपेक्षाकृत कम हैं। **हितेंद्र के. पटेल** का आलेख “Aspects of Socio-Political Thoughts of Madan Mohan Malaviya, A Liberal Hindu Nationalist” (*Proceedings of the Indian History Congress*, 2013) उन्हें “Liberal Hindu Nationalist” के रूप में वर्गीकृत करता है तथा उनके सामाजिक-राजनीतिक विचारों का संक्षिप्त विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

शोधगंगा पर उपलब्ध पीएच.डी. शोध प्रबंधों में **ज्योत्स्ना तिवारी** का *Madan Mohan Malaviya: Statesman, Parliamentarian and Educationalist* (बुंदेलखंड विश्वविद्यालय) तथा **निरंकार नाथ पांडेय** का *महामना मदन मोहन मालवीय के सामाजिक और राजनीतिक विचार* (इलाहाबाद विश्वविद्यालय) महत्वपूर्ण हैं। ये शोध प्रबंध जीवन-वृत्त एवं सामान्य विचारों का वर्णन तो करते हैं, किंतु राष्ट्रवाद के आधुनिक सैद्धांतिक ढाँचों (बनेडिक्ट एंडरसन, पार्थ चटर्जी आदि) के आलोक में गहन विश्लेषण नहीं करते।

अभी हाल के कुछ शोध-पत्रों में स्वराज, स्वदेशी एवं शिक्षा पर मालवीय के विचारों का उल्लेख मिलता है, परंतु अधिकांश कार्य वर्णनात्मक या प्रशंसात्मक प्रकृति के हैं। उनकी तुलना गांधी, तिलक या गोखले से व्यवस्थित रूप से कम ही की गई है।

शोध अंतराल (Research Gap) की पहचान

उपलब्ध साहित्य की समीक्षा से स्पष्ट होता है कि—

1. अधिकांश कृतियाँ जीवनीपरक या घटना-केंद्रित हैं; राजनीतिक चिंतन का सैद्धांतिक एवं तुलनात्मक विश्लेषण अपर्याप्त है।
2. मालवीय के विचारों को उदारवादी राष्ट्रवाद तथा सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के संश्लेषण के रूप में व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत करने वाला गहन अध्ययन दुर्लभ है।
3. शिक्षा (विशेषकर काशी हिंदू विश्वविद्यालय) को राष्ट्र निर्माण के साधन के रूप में उनके दृष्टिकोण का राजनीतिक सिद्धांत की दृष्टि से पर्याप्त विश्लेषण नहीं हुआ है।
4. समकालीन प्रासंगिकता (शिक्षा नीति, सांस्कृतिक पहचान, राष्ट्रीय एकता) के संदर्भ में उनके विचारों का आलोचनात्मक मूल्यांकन अभी भी अपूर्ण है।

अतः प्रस्तुत शोध इन्हीं अंतरालों को भरने का प्रयास करता है। यह मालवीय के राजनीतिक चिंतन को भारतीय राष्ट्रवाद की प्रमुख धाराओं के तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य में विश्लेषणात्मक ढंग से समझने का लक्ष्य रखता है।

शोध पद्धति (Research Methodology)

अध्ययन की प्रकृति (गुणात्मक, व्याख्यात्मक एवं विश्लेषणात्मक)

स्रोत सामग्री (प्राथमिक: मालवीय के भाषण, लेख, कांग्रेस प्रस्ताव; द्वितीयक: जीवनी, इतिहास पुस्तकें, शोध लेख)

विश्लेषण की रूपरेखा (ऐतिहासिक-विश्लेषणात्मक विधि + वैचारिक तुलना)

सैद्धांतिक ढाँचा (राष्ट्रवाद के सिद्धांत - एंडरसन, Gellner, पार्थ चटर्जी आदि के संदर्भ में)

मदन मोहन मालवीय का जीवन एवं राजनीतिक उदय

1. पारिवारिक पृष्ठभूमि एवं प्रारंभिक शिक्षा

पंडित मदन मोहन मालवीय का जन्म 25 दिसंबर 1861 को प्रयागराज (तत्कालीन इलाहाबाद) के लाल डिग्गी मुहल्ले में एक गौर ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनके पिता पंडित बृजनाथ संस्कृत के प्रकांड विद्वान तथा भागवत कथा के प्रसिद्ध वाचक थे। माता मूना देवी थीं। परिवार आर्थिक दृष्टि से साधारण था, किंतु सांस्कृतिक एवं धार्मिक दृष्टि से समृद्ध था। मालवीय परिवार का मूल संबंध मालवा क्षेत्र से था, जिसके कारण वे 'मालवीय' कहलाए। प्रारंभिक शिक्षा उन्होंने पारंपरिक संस्कृत पाठशालाओं में प्राप्त की, जहाँ धर्मशास्त्र, संस्कृत

साहित्य एवं भारतीय ज्ञान परंपरा का गहन अध्ययन हुआ। इसके पश्चात् वे म्योर सेंट्रल कॉलेज, इलाहाबाद में प्रवेश हुए तथा 1884 में स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण की। बाद में कलकत्ता विश्वविद्यालय से भी शिक्षा प्राप्त की। शिक्षा पूरी करने के बाद उन्होंने अध्यापन कार्य आरंभ किया। 1891 में वकालत प्रारंभ की तथा 1893 में इलाहाबाद उच्च न्यायालय में वकालत करने लगे। वकालत के दौरान उनकी सबसे उल्लेखनीय सफलता चौरी चौरा कांड (1922) में दोषी ठहराए गए स्वतंत्रता सेनानियों के मुकदमों की पैरवी थी, जिसमें उन्होंने कई अभियुक्तों को फाँसी से बचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

2. बनारस हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना का राजनीतिक महत्व

मालवीय की सबसे स्थायी एवं दूरगामी उपलब्धि काशी हिंदू विश्वविद्यालय (बनारस हिंदू विश्वविद्यालय) की स्थापना है। इसकी परिकल्पना उन्होंने 1904-05 के आसपास की थी। उनका स्पष्ट मत था कि औपनिवेशिक शिक्षा प्रणाली केवल ब्रिटिश शासन के लिए योग्य नौकरशाह पैदा करती है, जबकि भारत को ऐसे नागरिकों की आवश्यकता है जो भारतीय संस्कृति, धर्म, संस्कृत साहित्य तथा आधुनिक विज्ञान दोनों में पारंगत हों। 1915 में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय अधिनियम पारित हुआ तथा 4 फरवरी 1916 को वसंत पंचमी के दिन विश्वविद्यालय का औपचारिक उद्घाटन हुआ। मालवीय लगभग दो दशकों तक (1919-1939) इसके उपकुलपति रहे। विश्वविद्यालय की स्थापना केवल शैक्षणिक घटना नहीं थी, अपितु गहरे राजनीतिक महत्व की थी। यह भारतीय राष्ट्रवाद की सांस्कृतिक एवं बौद्धिक धारा का प्रतीक बना। मालवीय का उद्देश्य था कि यह संस्थान राष्ट्रीय चेतना का केंद्र बने, जहाँ छात्र देशभक्ति, नैतिकता एवं स्वावलंबन के साथ आधुनिक ज्ञान प्राप्त करें। विश्वविद्यालय ने औपनिवेशिक शिक्षा व्यवस्था के विकल्प के रूप में कार्य किया तथा राष्ट्रवादी बुद्धिजीवियों की एक पीढ़ी तैयार की। इसकी स्थापना में एनी बेसेंट, काशी नरेश तथा अनेक हिंदू राजाओं एवं सेठों का सहयोग भी रहा।

3. कांग्रेस में सक्रियता एवं अध्यक्ष पद

मालवीय का राजनीतिक जीवन 1886 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन से प्रारंभ हुआ। वे लगभग पचास वर्षों तक कांग्रेस से सक्रिय रूप से जुड़े रहे। वे उदारवादी (मॉडरेट) एवं चरमपंथी (एक्सट्रीमिस्ट) दोनों धड़ों के बीच सेतु का कार्य करते रहे। उनकी वाक्पटुता, संवैधानिक ज्ञान एवं राष्ट्रभक्ति के कारण उन्हें चार बार कांग्रेस का अध्यक्ष चुना गया—1909 (लाहौर), 1918 (दिल्ली), 1932 (दिल्ली) तथा 1933 (कलकत्ता)। स्वतंत्रता पूर्व काल में वे कांग्रेस के एकमात्र ऐसे नेता थे जिन्हें चार बार अध्यक्ष पद प्राप्त हुआ। वे इम्पीरियल लेजिस्लेटिव काउंसिल (1909-1920) के सदस्य रहे तथा बाद में सेंट्रल लेजिस्लेटिव असेंबली में भी सक्रिय रहे। 1916 के लखनऊ समझौते में मुसलमानों के लिए अलग निर्वाचन क्षेत्रों के प्रावधान का उन्होंने स्पष्ट विरोध किया। कांग्रेस के भीतर वे संवैधानिक सुधारों, शिक्षा के प्रसार तथा हिंदू-मुस्लिम एकता के पक्षधर रहे, यद्यपि बाद के वर्षों में सांप्रदायिक मुद्दों पर उनके मत भिन्न भी हुए।

4. हिंदू महासभा एवं अन्य संगठनों से संबंध

मालवीय हिंदू समाज के संगठन एवं सांस्कृतिक जागरण के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने 1906 के आसपास अखिल भारतीय हिंदू महासभा की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई तथा बाद में इससे सक्रिय रूप से जुड़े। 1923 में वे हिंदू महासभा के अध्यक्ष भी रहे। उनका उद्देश्य हिंदू समाज को संगठित करना, अस्पृश्यता निवारण

तथा शिक्षा का प्रसार करना था। वे शुद्धि आंदोलन के भी समर्थक रहे। पत्रकारिता के क्षेत्र में उन्होंने 'अभ्युदय' (हिंदी साप्ताहिक, बाद में दैनिक), 'लीडर' (अंग्रेजी दैनिक) तथा 'मर्यादा' (हिंदी मासिक) का संपादन एवं प्रकाशन किया। 1924 से 1946 तक वे हिंदुस्तान टाइम्स के बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स के चेयरमैन रहे। इसके अतिरिक्त वे हिंदी साहित्य सम्मेलन तथा अन्य सांस्कृतिक संगठनों से भी जुड़े रहे। उन्होंने हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए भी निरंतर प्रयास किए।

5. स्वतंत्रता आंदोलन में उनकी भूमिका का कालक्रम

मालवीय का स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान दीर्घकालिक एवं बहुआयामी था—

- **1886-1905:** कांग्रेस में सक्रियता, उदारवादी राजनीति एवं शिक्षा संबंधी आंदोलन।
- **1905-1918:** स्वदेशी आंदोलन का समर्थन, कांग्रेस अध्यक्ष पद (1909, 1918), विश्वविद्यालय स्थापना का प्रयास।
- **1919-1922:** असहयोग आंदोलन के दौरान शिक्षा संस्थानों के बहिष्कार का विरोध; काशी हिंदू विश्वविद्यालय को इससे बचाने में सफलता। चौरी चौरा कांड में स्वतंत्रता सेनानियों की कानूनी सहायता।
- **1930-1933:** सविनय अवज्ञा आंदोलन में सक्रिय भागीदारी, गिरफ्तारी। 1931 में गोलमेज सम्मेलन में गांधी के साथ भारत का प्रतिनिधित्व। 1932 एवं 1933 में पुनः कांग्रेस अध्यक्ष।
- **1932:** पूना पैक्ट के संदर्भ में भी उनकी भूमिका रही।
- **अंतिम वर्ष:** 1940 के दशक में सक्रिय राजनीति से अपेक्षाकृत कम जुड़े, किंतु राष्ट्र निर्माण एवं शिक्षा के कार्यों में संलग्न रहे। उनका निधन 12 नवंबर 1946 को हुआ।

इस प्रकार मालवीय का जीवन शिक्षा, संस्कृति, संवैधानिक राजनीति एवं राष्ट्रवाद का अनूठा संगम प्रस्तुत करता है। उनके राजनीतिक उदय ने भारतीय राष्ट्रवाद को एक विशिष्ट सांस्कृतिक एवं संस्थागत आयाम प्रदान किया।

मालवीय का राजनीतिक चिंतन

1. संवैधानिक उदारवाद और संवैधानिक सुधारों का समर्थन

मदन मोहन मालवीय के राजनीतिक चिंतन का आधार संवैधानिक उदारवाद था। वे ब्रिटिश शासन के अंतर्गत क्रमिक संवैधानिक सुधारों के माध्यम से भारत को स्वशासन की ओर ले जाने के पक्षधर थे। उन्होंने इम्पीरियल लेजिस्लेटिव काउंसिल (1909-1920) तथा बाद में सेंट्रल लेजिस्लेटिव असेंबली में सक्रिय सदस्य के रूप में शिक्षा, रेलवे के राष्ट्रीयकरण, प्राथमिक शिक्षा की अनिवार्यता तथा गिरमिटिया मजदूर व्यवस्था की समाप्ति जैसे विषयों पर जोरदार वकालत की। मालवीय कांग्रेस के उदारवादी (मॉडरेट) दल के प्रमुख नेताओं में से एक थे। वे याचिका, प्रेस, विधान परिषदों तथा सार्वजनिक जागरूकता के माध्यम से ब्रिटिश सरकार पर दबाव बनाने में विश्वास रखते थे। 1916 के लखनऊ सम्मेलन में मुसलमानों के लिए अलग निर्वाचन क्षेत्रों के प्रावधान का उन्होंने स्पष्ट विरोध किया, क्योंकि वे इसे राष्ट्रीय एकता के लिए घातक मानते थे। उनका मानना था कि संवैधानिक मार्ग से ही स्थायी एवं शांतिपूर्ण स्वराज प्राप्त किया जा सकता है। यद्यपि बाद में वे सविनय अवज्ञा आंदोलन में भी सम्मिलित हुए, परंतु उनका मूल झुकाव संवैधानिक राजनीति की ओर ही बना रहा।

2. स्वराज की अवधारणा: मालवीय की दृष्टि

मालवीय के लिए स्वराज केवल राजनीतिक स्वतंत्रता तक सीमित नहीं था। वे स्वराज को आत्मनिर्भरता, सांस्कृतिक जागरण एवं नैतिक उत्थान से जोड़कर देखते थे। उनका स्पष्ट मत था कि विदेशी शासन के रहते भारत का सर्वांगीण विकास संभव नहीं है। वे स्वराज को संवैधानिक अधिकारों, शिक्षा के प्रसार तथा आर्थिक स्वावलंबन के माध्यम से प्राप्त करने के पक्षधर थे। गांधीवादी स्वराज की तुलना में मालवीय का दृष्टिकोण अधिक व्यावहारिक एवं संस्थागत था। वे अहिंसा के समर्थक तो थे, किंतु निष्क्रिय अहिंसा के विरोधी थे। उन्होंने क्रांतिकारियों के उद्देश्यों का भी कहीं-कहीं समर्थन किया तथा आवश्यकता पड़ने पर उनकी सहायता भी की। उनके स्वराज की अवधारणा में हिंदू समाज का संगठन, शिक्षा का राष्ट्रीयकरण तथा स्वदेशी अर्थव्यवस्था का विकास प्रमुख तत्व थे।

3. शिक्षा, संस्कृति एवं राष्ट्र निर्माण का अंतर्संबंध

मालवीय के राजनीतिक चिंतन का सबसे मौलिक पक्ष शिक्षा एवं संस्कृति को राष्ट्र निर्माण का आधार मानना था। उनका दृढ़ विश्वास था कि औपनिवेशिक शिक्षा प्रणाली भारतीय मानस को गुलाम बनाती है। इसलिए उन्होंने काशी हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना के माध्यम से भारतीय ज्ञान परंपरा (संस्कृत, धर्मशास्त्र, दर्शन) को आधुनिक विज्ञान एवं तकनीक के साथ जोड़ने का प्रयास किया। वे शिक्षा को चरित्र-निर्माण, देशभक्ति एवं स्वाभिमान जगाने का साधन मानते थे। उनके अनुसार सच्ची शिक्षा वही है जो व्यक्ति को अपने धर्म, संस्कृति एवं राष्ट्र के प्रति समर्पित बनाए। विश्वविद्यालय की स्थापना केवल शैक्षणिक प्रयोग नहीं, अपितु सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की अभिव्यक्ति थी। मालवीय का मानना था कि जब तक भारतीय युवा अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़े नहीं रहेंगे, तब तक राजनीतिक स्वतंत्रता अधूरी रहेगी।

4. हिंदू-मुस्लिम एकता बनाम सांस्कृतिक संरक्षण

मालवीय हिंदू-मुस्लिम एकता के सिद्धांतात्मक समर्थक थे। उन्होंने अनेक अवसरों पर दोनों समुदायों के बीच सद्भाव बनाए रखने का प्रयास किया तथा दंगों के समय सहायता भी की। उन्होंने कहा था कि भारत का भविष्य हिंदू या मुसलमान के रूप में नहीं, बल्कि हिंदू और मुसलमान के रूप में एक साथ है। परंतु व्यावहारिक स्तर पर वे हिंदू समाज के संगठन एवं सांस्कृतिक संरक्षण को आवश्यक मानते थे। हिंदू महासभा से उनका गहरा संबंध इसी सोच का परिणाम था। वे अलग निर्वाचन क्षेत्रों, सांप्रदायिक पुरस्कार (Communal Award) तथा हिंदू हितों की उपेक्षा के विरोधी थे। उनका दृष्टिकोण यह था कि हिंदू समाज को संगठित एवं सशक्त बनाए बिना राष्ट्रीय एकता संभव नहीं है। इस द्वैध-एकता की कामना तथा सांस्कृतिक संरक्षण की आवश्यकता ने उनके चिंतन को जटिल एवं विवादास्पद बनाया।

5. सामाजिक सुधार, जाति व्यवस्था एवं राजनीतिक समानता पर उनके विचार

मालवीय सामाजिक सुधारों के प्रबल समर्थक थे। वे अस्पृश्यता को हिंदू समाज की सबसे बड़ी कमजोरी मानते थे तथा उसके निवारण के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहे। उन्होंने दलितों के मंदिर प्रवेश एवं शिक्षा के अधिकार का समर्थन किया। 1932 के पूना पैक्ट के संदर्भ में भी उनकी भूमिका सकारात्मक मानी जाती है। जाति व्यवस्था के संबंध में वे सुधारवादी दृष्टिकोण रखते थे। वे वर्ण व्यवस्था के मूल आध्यात्मिक आधार को स्वीकार करते हुए भी जन्म आधारित कठोर भेदभाव के विरोधी थे। राजनीतिक समानता के पक्षधर के रूप में

उन्होंने सभी वर्गों के लिए समान अधिकारों की वकालत की। शुद्धि आंदोलन का समर्थन उन्होंने हिंदू समाज की संख्यात्मक एवं सांस्कृतिक सुरक्षा के लिए किया।

6. आर्थिक विचार: स्वदेशी, ग्राम स्वराज्य एवं औद्योगिक विकास

आर्थिक क्षेत्र में मालवीय स्वदेशी के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने 1932 में अखिल भारतीय स्वदेशी संघ की स्थापना की तथा “भारतीय वस्तुएँ खरीदें” का आह्वान किया। उनका मानना था कि आर्थिक पराधीनता राजनीतिक पराधीनता का मूल कारण है।

वे ग्राम स्वराज्य एवं कुटीर उद्योगों के पक्षधर थे, किंतु आधुनिक औद्योगिक विकास के भी विरोधी नहीं थे। उन्होंने रेलवे के राष्ट्रीयकरण, स्वदेशी उद्योगों के संरक्षण तथा भारतीय पूंजी के विकास पर बल दिया। उनका आर्थिक चिंतन गांधीवादी ग्राम केंद्रित दृष्टिकोण तथा आधुनिक औद्योगिक राष्ट्र निर्माण के बीच संतुलन बनाने का प्रयास करता है।

मालवीय का राजनीतिक चिंतन संवैधानिक उदारवाद, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, शिक्षा केंद्रित राष्ट्र निर्माण तथा व्यावहारिक सामाजिक-आर्थिक सुधारों का अनूठा मिश्रण था। वे न तो पूर्णतः गांधीवादी थे, न ही केवल हिंदू राष्ट्रवादी। उनका चिंतन भारतीय राष्ट्रवाद की उस धारा का प्रतिनिधित्व करता है जो संस्था निर्माण, सांस्कृतिक जागरण एवं संवैधानिक राजनीति के माध्यम से स्वराज की प्राप्ति चाहती थी।

भारतीय राष्ट्रवाद के संदर्भ में मालवीय का योगदान

1. उदारवादी राष्ट्रवाद बनाम सांस्कृतिक राष्ट्रवाद: मालवीय की स्थिति

भारतीय राष्ट्रवाद की दो प्रमुख धाराएँ—उदारवादी (मॉडरेट) एवं सांस्कृतिक राष्ट्रवाद—मालवीय के चिंतन में एक साथ दिखाई देती हैं। उदारवादी राष्ट्रवाद संवैधानिक सुधार, याचिका, प्रेस एवं विधान परिषदों के माध्यम से स्वशासन की माँग करता था। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद भारतीय सभ्यता, धर्म, भाषा एवं परंपरा को राष्ट्र की आत्मा मानता था। मालवीय इन दोनों धाराओं के बीच सेतु का कार्य करते हैं। वे संवैधानिक राजनीति के प्रबल समर्थक थे तथा इम्पीरियल लेजिस्लेटिव काउंसिल में सक्रिय रहे। साथ ही वे हिंदू सांस्कृतिक पहचान, संस्कृत शिक्षा, हिंदी भाषा एवं सनातन धर्म के संरक्षण को राष्ट्र निर्माण का आधार मानते थे। उनका राष्ट्रवाद “संवैधानिक साधनों से सांस्कृतिक पुनर्निर्माण” का अनूठा मिश्रण था। वे न तो शुद्ध उदारवादी थे और न ही केवल सांस्कृतिक राष्ट्रवादी। उनकी स्थिति को “उदारवादी सांस्कृतिक राष्ट्रवाद” या “संवैधानिक हिंदू राष्ट्रवाद” कहना अधिक उपयुक्त है।

2. गांधीवादी राष्ट्रवाद से समानताएँ एवं भिन्नताएँ

समानताएँ - दोनों स्वराज, स्वदेशी, अहिंसा एवं नैतिक राजनीति के समर्थक थे। दोनों ने शिक्षा एवं चरित्र निर्माण को राष्ट्र निर्माण का आधार माना। दोनों हिंदू-मुस्लिम एकता के सिद्धांतात्मक पक्षधर थे तथा अस्पृश्यता निवारण के समर्थक रहे।

भिन्नताएँ - गांधी स्वराज को ग्राम केंद्रित, विकेंद्रीकृत एवं पूर्ण अहिंसक आंदोलन के रूप में देखते थे। मालवीय संवैधानिक मार्ग, संस्था निर्माण (विशेषकर विश्वविद्यालय) तथा संगठित हिंदू समाज पर अधिक बल देते थे। गांधी ने असहयोग आंदोलन में शिक्षा संस्थानों के बहिष्कार का आह्वान किया, जबकि मालवीय ने काशी हिंदू विश्वविद्यालय को इससे बचाने का प्रयास किया। गांधी जन आंदोलन एवं सत्याग्रह को प्रमुख साधन मानते थे,

जबकि मालवीय संवैधानिक राजनीति एवं शिक्षा को अधिक स्थायी आधार समझते थे। गांधी ने मालवीय को 'महामना' कहा, किंतु दोनों की रणनीतियाँ भिन्न रहीं।

3. तिलक, गोखले, लाला लाजपत राय एवं मालवीय के विचारों की तुलना

नेता	प्रमुख विशेषता	मालवीय से समानता	मालवीय से भिन्नता
गोखले	उदारवादी, संवैधानिक सुधार	संवैधानिक मार्ग का समर्थन	गोखले अधिक उदारवादी; मालवीय सांस्कृतिक पहचान पर बल
तिलक	चरमपंथी, स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार	स्वराज एवं स्वदेशी का समर्थन	तिलक आक्रामक; मालवीय संवैधानिक एवं संयमी
लाला लाजपत राय	सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, हिंदू संगठन	हिंदू महासभा, सांस्कृतिक जागरण	लाजपत राय अधिक आक्रामक; मालवीय अधिक संतुलित
मालवीय	संवैधानिक + सांस्कृतिक संश्लेषण	—	शिक्षा एवं संस्था निर्माण पर विशेष बल

मालवीय गोखले की संवैधानिक राजनीति तथा तिलक-लाजपत राय की सांस्कृतिक चेतना दोनों को आत्मसात करते हुए एक मध्यम मार्ग अपनाते हैं।

4. हिंदू पहचान एवं राष्ट्रवाद: मालवीय का दृष्टिकोण

मालवीय हिंदू पहचान को राष्ट्रवाद का आवश्यक आधार मानते थे। उनका तर्क था कि हिंदू समाज संगठित एवं सशक्त हुए बिना राष्ट्रीय एकता अधूरी रहेगी। हिंदू महासभा से उनका संबंध, शुद्धि आंदोलन का समर्थन तथा काशी हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना इसी सोच की अभिव्यक्ति थी।

आलोचनात्मक दृष्टि से देखा जाए तो उनके दृष्टिकोण में एक आंतरिक तनाव था। वे हिंदू-मुस्लिम एकता की बात करते थे, किंतु व्यावहारिक रूप से हिंदू हितों की रक्षा को प्राथमिकता देते थे। अलग निर्वाचन क्षेत्रों एवं सांप्रदायिक पुरस्कार का विरोध उनके राष्ट्रवाद की एकतावादी प्रकृति को दर्शाता है, जबकि हिंदू संगठन पर बल सांप्रदायिक आलोचना का कारण बना। इतिहासकारों में कुछ उन्हें "उदार हिंदू राष्ट्रवादी" मानते हैं, तो कुछ उनके योगदान को सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की मुख्यधारा में रखते हैं। वास्तव में उनका दृष्टिकोण समावेशी राष्ट्रवाद एवं सांस्कृतिक संरक्षण के बीच संतुलन बनाने का प्रयास था, जो पूर्णतः सफल नहीं हो सका।

5. शिक्षा के माध्यम से राष्ट्र निर्माण: बीएचयू मॉडल का राजनीतिक आयाम

काशी हिंदू विश्वविद्यालय मालवीय के राष्ट्रवाद का सबसे महत्वपूर्ण व्यावहारिक प्रयोग था। इसका राजनीतिक आयाम अत्यंत गहरा था—

- यह औपनिवेशिक शिक्षा व्यवस्था के विकल्प के रूप में स्थापित हुआ।
- भारतीय ज्ञान परंपरा (संस्कृत, धर्म, दर्शन) को आधुनिक विज्ञान से जोड़कर सांस्कृतिक आत्मविश्वास जगाने का प्रयास था।
- विश्वविद्यालय को राष्ट्रवादी चेतना का केंद्र बनाने का लक्ष्य था, जहाँ छात्र देशभक्त एवं चरित्रवान नागरिक बनें।

- यह हिंदू सांस्कृतिक पुनरुत्थान का प्रतीक बना, किंतु मालवीय ने इसे संप्रदाय विशेष तक सीमित नहीं रखा।

बीएचयू मॉडल यह सिद्ध करता है कि मालवीय शिक्षा को राजनीतिक स्वतंत्रता का पूर्व-आधार मानते थे। उनके अनुसार बिना सांस्कृतिक एवं बौद्धिक स्वतंत्रता के राजनीतिक स्वतंत्रता अधूरी रहती है।

6. स्वराज के प्रति उनकी व्यावहारिक रणनीति

मालवीय की स्वराज संबंधी रणनीति बहुआयामी थी—

- a. **संवैधानिक मार्ग:** विधान परिषदों, याचिकाओं एवं संवाद के माध्यम से सुधार।
- b. **संस्था निर्माण:** शिक्षा संस्थानों (बीएचयू) के माध्यम से दीर्घकालिक राष्ट्र निर्माण।
- c. **जन जागरण:** पत्रकारिता (अभ्युदय, लीडर, मर्यादा) एवं सार्वजनिक भाषण।
- d. **आर्थिक स्वदेशी:** स्वदेशी वस्तुओं का प्रचार एवं स्वदेशी संघ की स्थापना।
- e. **आंदोलन में सीमित भागीदारी:** सविनय अवज्ञा में भाग लिया, किंतु असहयोग के शिक्षा बहिष्कार का विरोध किया।

उनकी रणनीति क्रांतिकारी उग्रता से दूर, संयमित, संस्थागत एवं दीर्घकालिक थी। वे तत्काल राजनीतिक सत्ता प्राप्ति से अधिक राष्ट्र के आंतरिक सशक्तिकरण पर बल देते थे।

मालवीय का योगदान भारतीय राष्ट्रवाद को एक विशिष्ट आयाम प्रदान करता है—जहाँ संवैधानिक राजनीति, सांस्कृतिक जागरण एवं शिक्षा एक साथ राष्ट्र निर्माण के साधन बनते हैं। वे उदारवादी एवं सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के संश्लेषण के प्रतिनिधि हैं, जिनकी व्यावहारिक रणनीति संस्था निर्माण पर केंद्रित रही।

आलोचनात्मक मूल्यांकन

1. मालवीय के विचारों की शक्तियाँ

मदन मोहन मालवीय के राजनीतिक चिंतन की सबसे बड़ी शक्ति उनकी दीर्घकालिक एवं रचनात्मक दृष्टि थी। वे केवल आंदोलन या सत्ता प्राप्ति तक सीमित नहीं रहे, बल्कि संस्था निर्माण को राष्ट्र निर्माण का आधार मानते थे। काशी हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना इस दृष्टि का सर्वोत्तम उदाहरण है। उन्होंने शिक्षा को सांस्कृतिक आत्मविश्वास एवं राष्ट्रीय चरित्र निर्माण का साधन बनाया, जो उस समय के अधिकांश नेताओं से भिन्न दृष्टिकोण था।

उनकी दूसरी प्रमुख शक्ति संवैधानिक राजनीति एवं जन आंदोलन के बीच संतुलन बनाने का प्रयास था। वे उदारवादी एवं चरमपंथी दोनों धड़ों के बीच सेतु का कार्य करते रहे। सामाजिक सुधार के क्षेत्र में अस्पृश्यता निवारण, दलित उत्थान तथा शिक्षा के प्रसार पर उनका बल सराहनीय था। आर्थिक क्षेत्र में स्वदेशी का समर्थन तथा पत्रकारिता के माध्यम से जनजागरण उनकी व्यावहारिक बुद्धि का परिचायक है। कुल मिलाकर उनके विचार राष्ट्र के आंतरिक सशक्तिकरण पर केंद्रित थे, जो केवल राजनीतिक स्वतंत्रता से आगे जाकर सांस्कृतिक एवं नैतिक पुनर्निर्माण की बात करते थे।

2. सीमाएँ एवं विरोधाभास

मालवीय के विचारों में सबसे स्पष्ट विरोधाभास हिंदू-मुस्लिम एकता की सैद्धांतिक स्वीकृति तथा हिंदू सांस्कृतिक संरक्षण की व्यावहारिक प्राथमिकता के बीच था। वे बार-बार एकता की बात करते थे, किंतु हिंदू

महासभा से गहरा संबंध, शुद्धि आंदोलन का समर्थन तथा हिंदू समाज के संगठन पर बल उनके रुख को जटिल बना देता है। अलग निर्वाचन क्षेत्रों एवं सांप्रदायिक पुरस्कार का विरोध उनके एकतावादी पक्ष को दर्शाता है, परंतु हिंदू पहचान को राष्ट्रवाद का आधार बनाने का उनका आग्रह कई बार सांप्रदायिक व्याख्या का कारण बना। असहयोग आंदोलन के दौरान शिक्षा संस्थानों के बहिष्कार का विरोध करना व्यावहारिक दृष्टि से सही था, किंतु इससे वे जन आंदोलन की मुख्यधारा से कुछ दूर भी हो गए। उनके चिंतन में संवैधानिक उदारवाद एवं सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के बीच तनाव सदैव बना रहा, जिसे वे पूर्णतः सुलझा नहीं सके।

3. समकालीन इतिहासकारों एवं राजनीतिक चिंतकों द्वारा की गई आलोचनाएँ

कुछ इतिहासकारों ने मालवीय पर हिंदू सांप्रदायिक पहचान को राजनीतिक रूप देने का आरोप लगाया है। ए.जी. नूरानी जैसे लेखकों ने उन्हें बनारस में राजनीतिक हिंदू पहचान के निर्माण का प्रमुख व्यक्ति माना है। जवाहरलाल नेहरू ने एक अवसर पर काशी हिंदू विश्वविद्यालय को “हिंदू सांप्रदायिक चिंतन का गढ़” तक कहा था। कुछ विद्वान उनके हिंदू महासभा से संबंध को कांग्रेस की धर्मनिरपेक्ष छवि के विपरीत मानते हैं। दूसरी ओर, जगन्नाथ प्रसाद मिश्र जैसे शोधकर्ताओं ने उन्हें “composite, constructive and creative” राष्ट्रवाद का प्रतिनिधि बताया है। हितेंद्र के. पटेल ने उन्हें “Liberal Hindu Nationalist” की संज्ञा दी है। आलोचना मुख्यतः उनके हिंदू संगठन संबंधी कार्यों पर केंद्रित रही है, जबकि उनके शिक्षा एवं संवैधानिक योगदान की प्रायः प्रशंसा ही हुई है। कुल मिलाकर आलोचनाएँ उनके द्वैध चरित्र—एकता की कामना एवं सांस्कृतिक संरक्षण—को लेकर ही अधिक हैं।

4. क्या मालवीय को केवल “उदारवादी” या “हिंदू राष्ट्रवादी” के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है?

मालवीय को केवल “उदारवादी” या केवल “हिंदू राष्ट्रवादी” की श्रेणी में रखना उनके चिंतन की जटिलता को सरल बना देना होगा। वे शुद्ध उदारवादी नहीं थे, क्योंकि वे सांस्कृतिक पहचान, हिंदू संगठन एवं शिक्षा के राष्ट्रीयकरण पर अत्यधिक बल देते थे। वे शुद्ध हिंदू राष्ट्रवादी भी नहीं थे, क्योंकि वे संवैधानिक मार्ग, हिंदू-मुस्लिम एकता की सैद्धांतिक स्वीकृति तथा समावेशी राष्ट्र निर्माण की बात करते थे। वास्तव में मालवीय उदारवादी संवैधानिक राजनीति एवं सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के संश्लेषण के प्रतिनिधि हैं। उनकी स्थिति को “उदारवादी सांस्कृतिक राष्ट्रवादी” या “संवैधानिक हिंदू राष्ट्रवादी” कहना अधिक सटीक है। वे भारतीय राष्ट्रवाद की उस मध्यवर्ती धारा का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो न तो पूर्णतः पश्चिमी उदारवाद पर आधारित थी और न ही केवल धार्मिक कट्टरता पर। उनका चिंतन दोनों धाराओं की सीमाओं को पार करने का प्रयास था, यद्यपि व्यावहारिक स्तर पर यह प्रयास पूर्णतः सफल नहीं हो सका।

समकालीन प्रासंगिकता

1. वर्तमान भारतीय राजनीति में मालवीय के विचारों की प्रासंगिकता

वर्तमान भारतीय राजनीति में मदन मोहन मालवीय के विचार कई स्तरों पर प्रासंगिक बने हुए हैं। उनका संवैधानिक उदारवाद एवं संस्था निर्माण पर बल आज भी लोकतांत्रिक राजनीति के लिए मार्गदर्शक है। वे राजनीतिक सत्ता प्राप्ति से अधिक दीर्घकालिक राष्ट्र निर्माण पर जोर देते थे, जो वर्तमान में केवल चुनावी राजनीति तक सीमित हो जाने वाली प्रवृत्ति के विपरीत है। उनका हिंदू सांस्कृतिक पहचान एवं राष्ट्रीय एकता के बीच संतुलन बनाने का प्रयास आज के सांप्रदायिक धुवीकरण के संदर्भ में विशेष रूप से विचारणीय है। वे हिंदू समाज के

संगठन को आवश्यक मानते हुए भी हिंदू-मुस्लिम एकता की सैद्धांतिक वकालत करते थे। वर्तमान राजनीति में सांस्कृतिक पहचान की राजनीति एवं समावेशी राष्ट्रवाद के बीच चल रहे तनाव को समझने के लिए मालवीय का द्वैध दृष्टिकोण एक महत्वपूर्ण संदर्भ बिंदु प्रदान करता है। उनके विचारों की प्रासंगिकता इस बात में भी है कि वे राजनीति को नैतिकता, शिक्षा एवं संस्कृति से अलग नहीं मानते थे।

2. शिक्षा नीति, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद एवं राष्ट्रीय एकता के संदर्भ में

शिक्षा नीति के क्षेत्र में मालवीय के विचारों की प्रासंगिकता सर्वाधिक स्पष्ट है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 में भारतीय ज्ञान परंपरा, बहुविषयक शिक्षा, चरित्र निर्माण एवं समग्र विकास पर जो बल दिया गया है, वह काशी हिंदू विश्वविद्यालय के मूल आदर्शों से गहराई से मेल खाता है। मालवीय ने पारंपरिक ज्ञान (संस्कृत, दर्शन, धर्म) को आधुनिक विज्ञान के साथ जोड़ने का जो मॉडल प्रस्तुत किया था, वह आज के शिक्षा सुधारों में पुनः दिखाई देता है। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के संदर्भ में उनके विचार वर्तमान विमर्श को समृद्ध करते हैं। वे संस्कृति को राष्ट्र की आत्मा मानते थे, किंतु उसे संकीर्ण संप्रदायवाद में बदलने के विरोधी भी थे। राष्ट्रीय एकता के प्रश्न पर उनका दृष्टिकोण यह था कि सांस्कृतिक आत्मविश्वास एवं सामाजिक सुधार दोनों आवश्यक हैं। आज जब राष्ट्रीय एकता, भाषा, इतिहास लेखन एवं सांस्कृतिक प्रतीकों पर तीव्र बहस हो रही है, तब मालवीय का संतुलित किंतु स्पष्ट सांस्कृतिक दृष्टिकोण एक रचनात्मक विकल्प प्रस्तुत करता है।

3. आधुनिक राष्ट्र-राज्य निर्माण में उनके योगदान का पुनर्मूल्यांकन

आधुनिक भारतीय राष्ट्र-राज्य के निर्माण में मालवीय का योगदान मुख्यतः संस्थागत एवं वैचारिक स्तर पर था। काशी हिंदू विश्वविद्यालय जैसी संस्था ने न केवल शिक्षा का विस्तार किया, बल्कि राष्ट्रीय चेतना के निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनका यह विश्वास कि राजनीतिक स्वतंत्रता सांस्कृतिक एवं बौद्धिक स्वतंत्रता के बिना अधूरी है, राष्ट्र-राज्य निर्माण की प्रक्रिया को गहराई प्रदान करता है। पुनर्मूल्यांकन की दृष्टि से देखा जाए तो मालवीय का योगदान दो स्तरों पर महत्वपूर्ण है। प्रथम, उन्होंने शिक्षा को राष्ट्र निर्माण का केंद्रीय साधन बनाया, जो आज भी प्रासंगिक है। द्वितीय, उन्होंने संवैधानिक राजनीति एवं सांस्कृतिक जागरण के संश्लेषण का प्रयास किया, जो आधुनिक भारत की पहचान के निर्माण में सहायक सिद्ध हुआ। यद्यपि उनके विचारों में कुछ आंतरिक तनाव थे, फिर भी उनका समग्र योगदान राष्ट्र को केवल राजनीतिक इकाई न मानकर सांस्कृतिक एवं नैतिक समुदाय के रूप में देखने की परंपरा को मजबूत करता है। वर्तमान में जब भारत वैश्विक मंच पर अपनी सांस्कृतिक पहचान एवं आधुनिक विकास दोनों को एक साथ आगे बढ़ाने का प्रयास कर रहा है, तब मालवीय का चिंतन एक महत्वपूर्ण वैचारिक संसाधन के रूप में उभरता है। उनका योगदान याद दिलाता है कि राष्ट्र-राज्य निर्माण केवल संविधान एवं अर्थव्यवस्था तक सीमित नहीं, बल्कि शिक्षा, संस्कृति एवं चरित्र निर्माण की दीर्घकालिक प्रक्रिया है।

निष्कर्ष (Conclusion)

प्रस्तुत शोध से स्पष्ट होता है कि मदन मोहन मालवीय का राजनीतिक चिंतन भारतीय राष्ट्रवाद की मुख्यधारा में एक विशिष्ट एवं संतुलित स्थान रखता है। उनका चिंतन न तो शुद्ध उदारवादी संवैधानिक राजनीति तक सीमित था और न ही केवल सांस्कृतिक या हिंदू राष्ट्रवाद तक। वे दोनों धाराओं का सृजनात्मक संश्लेषण प्रस्तुत करते हैं।

शिक्षा एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान को उन्होंने राष्ट्र निर्माण का सबसे महत्वपूर्ण आधार माना। काशी हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना इस दृष्टिकोण का व्यावहारिक एवं दीर्घकालिक प्रमाण है।

मालवीय की स्वराज संबंधी अवधारणा राजनीतिक स्वतंत्रता के साथ-साथ सांस्कृतिक आत्मविश्वास, नैतिक उत्थान एवं आर्थिक स्वावलंबन को समेटे हुए थी। वे संवैधानिक मार्ग के प्रबल समर्थक रहे, किंतु आवश्यकता पड़ने पर जन आंदोलनों में भी सम्मिलित हुए। हिंदू-मुस्लिम एकता की सैद्धांतिक स्वीकृति एवं हिंदू सांस्कृतिक संरक्षण की व्यावहारिक आवश्यकता के बीच उनका द्वैध उनके चिंतन की जटिलता को प्रकट करता है। कुल मिलाकर उनका योगदान संस्था निर्माण, शिक्षा के राष्ट्रीयकरण एवं सांस्कृतिक जागरण के माध्यम से राष्ट्र को सशक्त बनाने का रहा।

शोध प्रश्नों के उत्तर

शोध के प्रारंभ में उठाए गए प्रमुख प्रश्नों के उत्तर इस प्रकार हैं—

- मालवीय के राजनीतिक चिंतन के मूल तत्व संवैधानिक उदारवाद, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, शिक्षा केंद्रित राष्ट्र निर्माण एवं व्यावहारिक सामाजिक-आर्थिक सुधार थे।
- भारतीय राष्ट्रवाद की विभिन्न धाराओं में उनकी स्थिति मध्यवर्ती थी। वे उदारवादी एवं सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के संश्लेषण के प्रतिनिधि हैं।
- शिक्षा को उन्होंने राष्ट्रवाद का सबसे प्रभावी एवं स्थायी साधन बनाया। बीएचयू मॉडल इसी सोच की अभिव्यक्ति है।
- उनके विचारों में हिंदू सांस्कृतिक पहचान एवं राष्ट्रीय एकता का संबंध तनावपूर्ण किंतु प्रयासपूर्ण था। वे एकता चाहते हुए भी सांस्कृतिक संरक्षण को आवश्यक मानते थे।
- वर्तमान भारतीय राजनीति, शिक्षा नीति एवं सांस्कृतिक विमर्श में उनके विचार अत्यंत प्रासंगिक हैं, विशेषकर समग्र शिक्षा, सांस्कृतिक आत्मविश्वास एवं दीर्घकालिक राष्ट्र निर्माण के संदर्भ में।

परिकल्पना की पुष्टि होती है कि मालवीय का राजनीतिक चिंतन उदारवादी संवैधानिक राष्ट्रवाद तथा सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का संश्लेषण प्रस्तुत करता है, जिसमें शिक्षा एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान को भारतीय राष्ट्र निर्माण का प्रमुख आधार माना गया है।

भविष्य के शोध के लिए सुझाव

1. मालवीय के पत्रकारिता संबंधी लेखन (अभ्युदय, लीडर, मर्यादा) का गहन वैचारिक विश्लेषण अभी अपेक्षित है।
2. काशी हिंदू विश्वविद्यालय के प्रारंभिक वर्षों में राष्ट्रवादी गतिविधियों का विस्तृत अध्ययन किया जा सकता है।
3. मालवीय एवं समकालीन अन्य नेताओं (विशेषकर मदन मोहन मालवीय तथा पुरुषोत्तम दास टंडन) के विचारों की तुलनात्मक पड़ताल उपयोगी सिद्ध होगी।
4. उनके आर्थिक विचारों—स्वदेशी एवं औद्योगिक विकास—का अलग से गहन अध्ययन संभव है।
5. समकालीन शिक्षा नीति (NEP 2020) एवं मालवीय के शैक्षिक आदर्शों के बीच तुलनात्मक शोध भविष्य में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है।

मदन मोहन मालवीय भारतीय राष्ट्रवाद के उन विरल नेताओं में से हैं, जिन्होंने राजनीति को शिक्षा, संस्कृति एवं चरित्र निर्माण से जोड़कर देखा। उनका जीवन एवं चिंतन याद दिलाता है कि राष्ट्र निर्माण केवल सत्ता या आंदोलन की घटना नहीं, अपितु दीर्घकालिक संस्थागत एवं सांस्कृतिक प्रक्रिया है। वर्तमान भारत जब अपनी सांस्कृतिक जड़ों एवं आधुनिक विकास दोनों को एक साथ आगे बढ़ाने का प्रयास कर रहा है, तब महामना के विचार एक महत्वपूर्ण वैचारिक प्रकाश स्तंभ का कार्य कर सकते हैं। उनका योगदान हमें यह सिखाता है कि सच्चा स्वराज वही है जो व्यक्ति एवं समाज दोनों के आंतरिक उत्थान पर आधारित हो।

संदर्भ सूची (References)

1. बखशी, एस. आर. (1989). *स्वतंत्रता संग्राम: मदन मोहन मालवीय*, अनमोल पब्लिकेशन्स।
2. बखशी, एस. आर. (1991). *मदन मोहन मालवीय: व्यक्ति और विचारधारा*, अनमोल पब्लिकेशन्स।
3. गुप्ता, सुंदर लाल. (1978). *पंडित मदन मोहन मालवीय: एक सामाजिक-राजनीतिक अध्ययन*, चग पब्लिकेशन्स।
4. चतुर्वेदी, सीताराम. (1996). *मदन मोहन मालवीय*, प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार।
5. चंद्र, बिपन, मुखर्जी, मृदुला, मुखर्जी, आदित्य, महाजन, सुचेता, एवं पणिककर, के. एन. (1989). *भारत का स्वतंत्रता संघर्ष*, पेंगुइन बुक्स।
6. जैफ्रेलॉट, क्रिस्टोफ. (1996). *भारत में हिंदू राष्ट्रवादी आंदोलन*, कोलंबिया यूनिवर्सिटी प्रेस।
7. पटेल, हितेंद्र के. (2013). मदन मोहन मालवीय के सामाजिक-राजनीतिक विचारों के पहलू: एक उदार हिंदू राष्ट्रवादी, *प्रोसीडिंग्स ऑफ द इंडियन हिस्ट्री कांग्रेस*, 74, पृ. 581।
8. परमानंद. (1985). *महामना मदन मोहन मालवीय: एक ऐतिहासिक जीवनी* (खंड 1-2), मालवीय अध्ययन संस्थान, काशी हिंदू विश्वविद्यालय।
9. पाण्डेय, विष्णुनाथ. (2015). *पंडित मदन मोहन मालवीय और भारतीय राष्ट्रवाद के रचनात्मक वर्ष* एल.जी. पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स।
10. मिश्रा, जगन्नाथ प्रसाद. (2016). *मदन मोहन मालवीय और भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन*। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
11. मैनी, एस. के., चंद्रमौली, के., एवं पाण्डेय, विष्णुनाथ. (2009). *आधुनिक भारत के द्रष्टा: मदन मोहन मालवीय*। महामना मालवीय ट्रस्ट।
12. तिवारी, ज्योत्स्ना. (2010). *मदन मोहन मालवीय: राजनेता, सांसद और शिक्षाविद्* (डॉक्टरेट शोध प्रबंध, बुंदेलखंड विश्वविद्यालय), शोधगंगा।



EARN YOUR

MBA

WWW.IIMPS.IN



Accreditation & Ranking



UGC / NCTE Approved.

INFO@IIMPS.IN

☎ 011-41005174

RESEARCH
GATEWAY

STOP PLAGIARISM



Arogyam Ayurveda
Holistic Healing through herbs



AROGYAM
ONLINE

PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

परिवर्तन

COLOR PSYCHOLOGY : HOW COLOR AFFECT YOUR CHILD



BLUE

Calms your Child's
Mind & Body

YELLOW

Promotes Concentration,
Stimulates the Memory

PINK

Evokes Empathy,
makes your Child Calm

RED

Excites and energizes
your Child's body

GREEN

Improves Reading speed
and Comprehension

www.parivartan4u.com



परिवर्तन

Confuse about your children's future?

भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध

ISSN 2321 – 9726

WWW.BHARTIYASHODH.COM



**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF
MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY**

ISSN – 2250 – 1959 (O) 2348 – 9367 (P)

WWW.IRJMST.COM



**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF
COMMERCE, ARTS AND SCIENCE**

ISSN 2319 – 9202

WWW.CASIRJ.COM



**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF
MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES**

ISSN 2277 – 9809 (O) 2348 - 9359 (P)

WWW.IRJMSSH.COM



**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE
ENGINEERING AND TECHNOLOGY**

ISSN 2454-3195 (online)

WWW.RJSET.COM



**INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF
MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION**

ISSN 2582-5445

WWW.IRJMSI.COM



**JOURNAL OF LEGAL STUDIES, POLITICS
AND ECONOMICS RESEARCH**

WWW.JLPER.COM

JLPE